बच्चों के लिए बाइबिल
प्रस्तुति

चालीस वर्ष

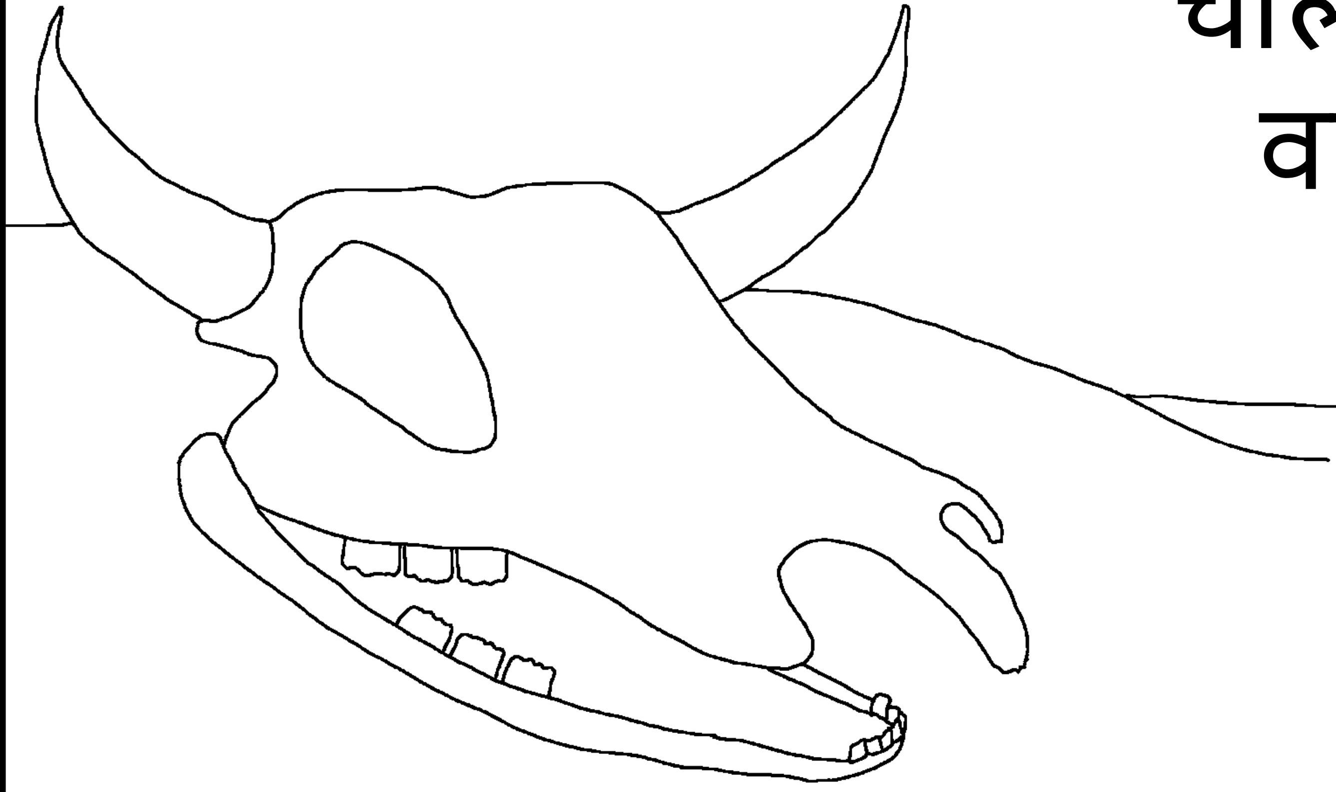

लेखक: Edward Hughes
व्याख्याकार: Janie Forest; Alastair Paterson
रूपान्तरकार: Lyn Doerksen
अनुवाद: Suresh Kumar Masih
प्रस्तुतकर्त्ता: Bible for Children
www.M1914.org
BFC
PO Box 3
Winnipeg, MB R3C 2G1
Canada

©2021
Bible for Children, Inc.
अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

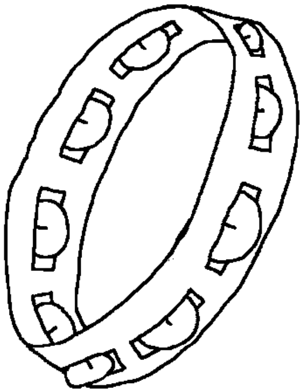

जब परमेश्वर इस्राएलियों को बचाकर मिस्र से बाहर ले आया तब, मूसा ने आराधना में लोगों का नेतृत्व किया। वह आराधना का एक गीत भी बनाया। "मैं यहोवा का गीत गाऊंगा क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है।" परमेश्वर ने इसराइल के लिए जितने बड़े बड़े काम किया था, सब के लिए
मूसा ने गीत गाया।

हलिलूयाह!

परमेश्वर की स्तुति हो!

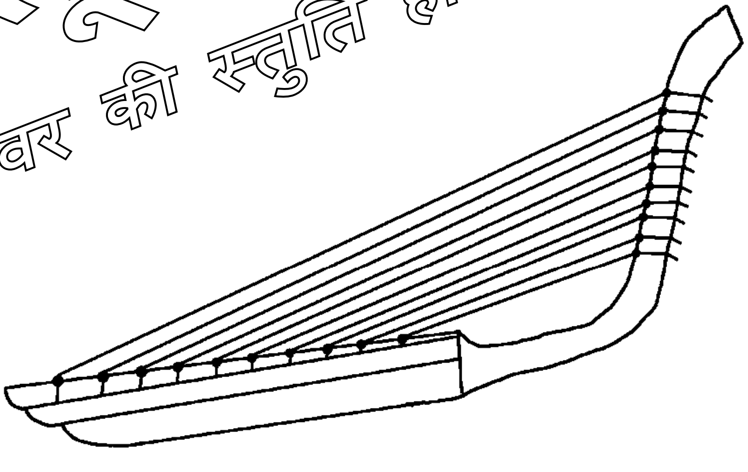

रेगिस्तान में तीन दिनों के बाद प्यासे लोग एक कुण्ड को पाये। लेकिन वे उस कड़वे पानी को पी न सके। प्रार्थना करने के वजाय, लोगों ने शिकायत की। परमेश्वर बहुत दयालु था। उसने पानी को पीने योग्य बना दिया।

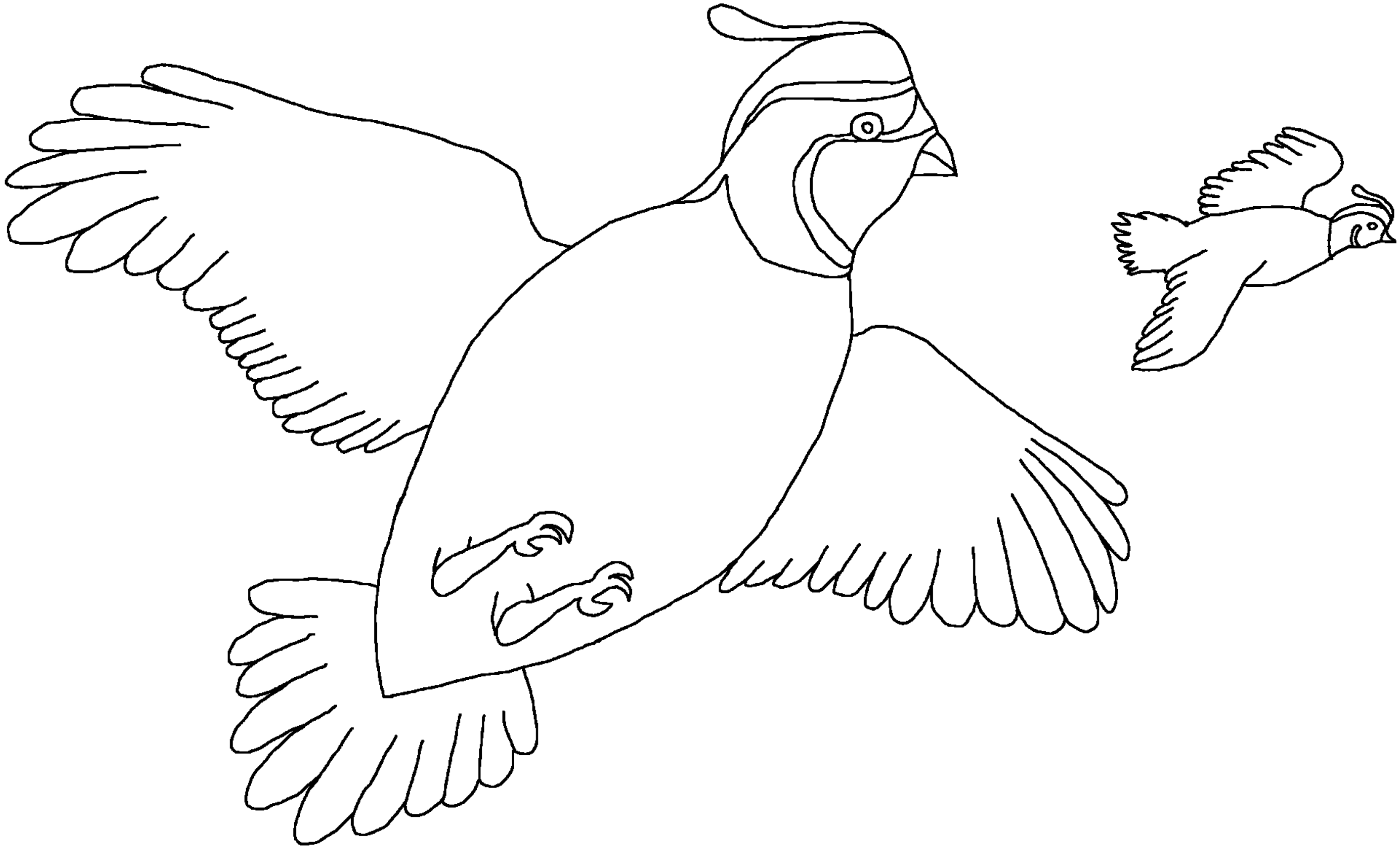

ऐसा लगता है की लोगों ने सब कुछ के लिए शिकायत की थी। "हमारे पास मिस्र में भोजन था। वे बिलखने लगे," हम रेगिस्तान में भूखो मर जाएगे। उसी शाम परमेश्वर ने बटेरों को उनके मध्य भेजा। लोग उन्हें आसानी से पकड़ सकते थे।

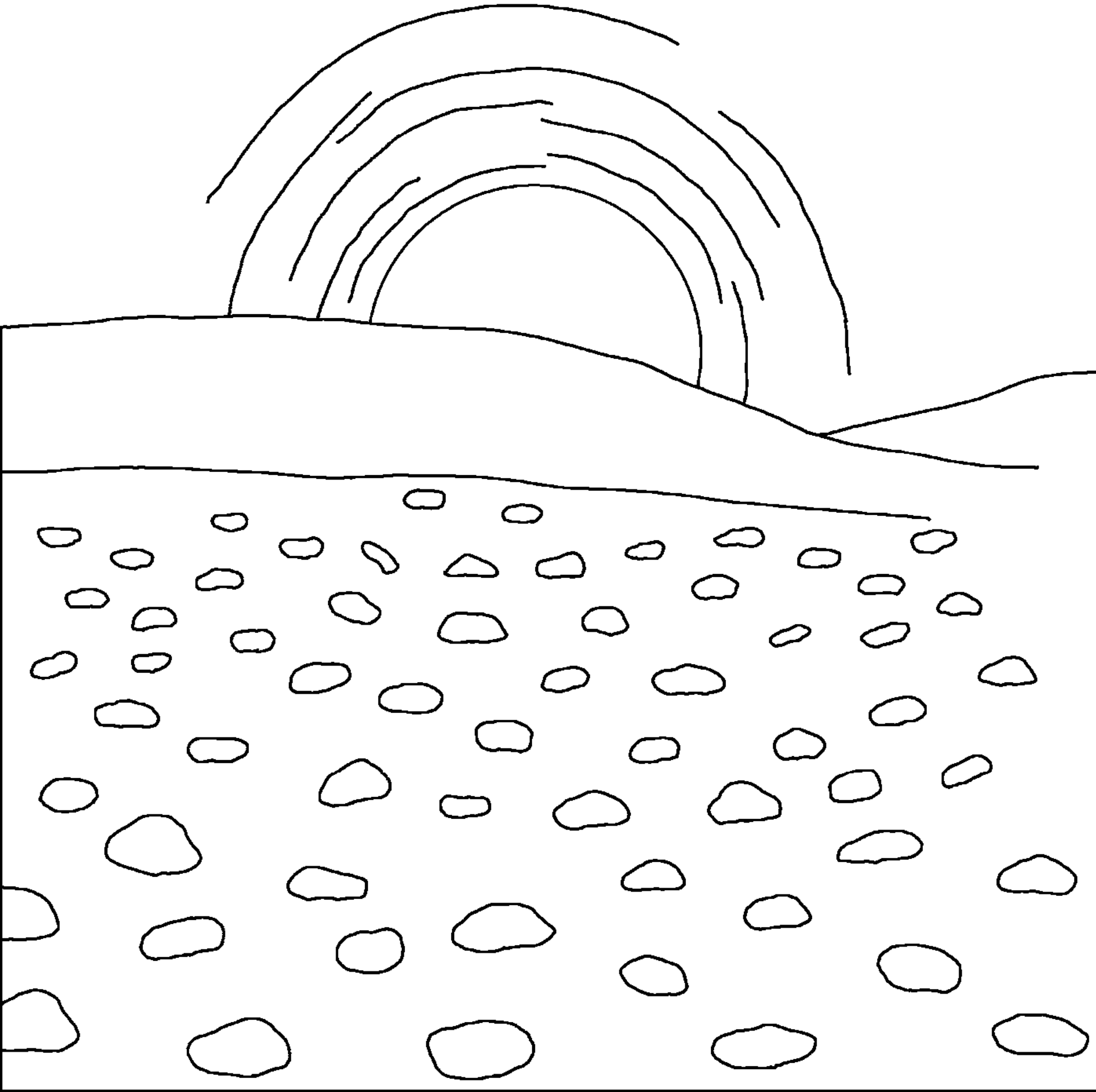

अगली सुबह परमेश्वर ने मन्ना भेजा। यह एक ऐसा रोटी था जो शहद के पूवे की तरह चखने में लगता था।

हर सुबह मन्ना तैयार जमीन पर पड़ा रहता था की बटोरा जा सके। इस तरह परमेश्वर रेगिस्तान में अपने लोगों को खिलाया।

उन्हें हर दिन भोजन के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना था। लेकिन कुछ लोगों ने आवश्यकता से ज्यादा मन्ना एकत्र किया, यहाँ तक की। परमेश्वर ने कहा था की वह दूसरे दिन तक नहीं बचेगा।

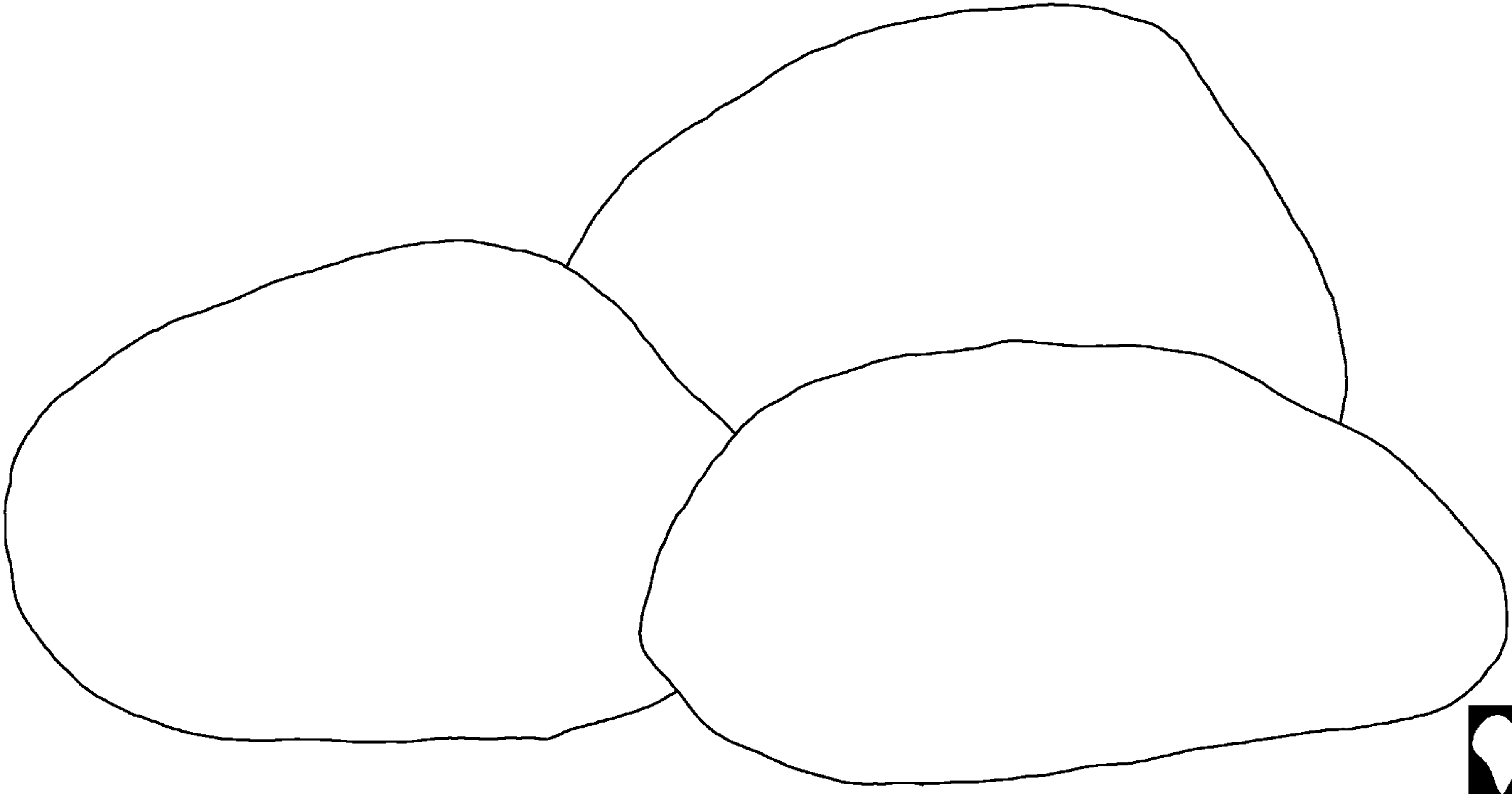

केवल सब्त के दिन को छोड़कर, पर्याप्त मन्ना के अलावा, पिछले दिन का बटोरा हुवा मन्ना कीड़ों से भर जाता था। इस विशेष सातवें दिन को लोग आराम करते थे और पिछले रात के बटोरे मन्ना को खाते थे।

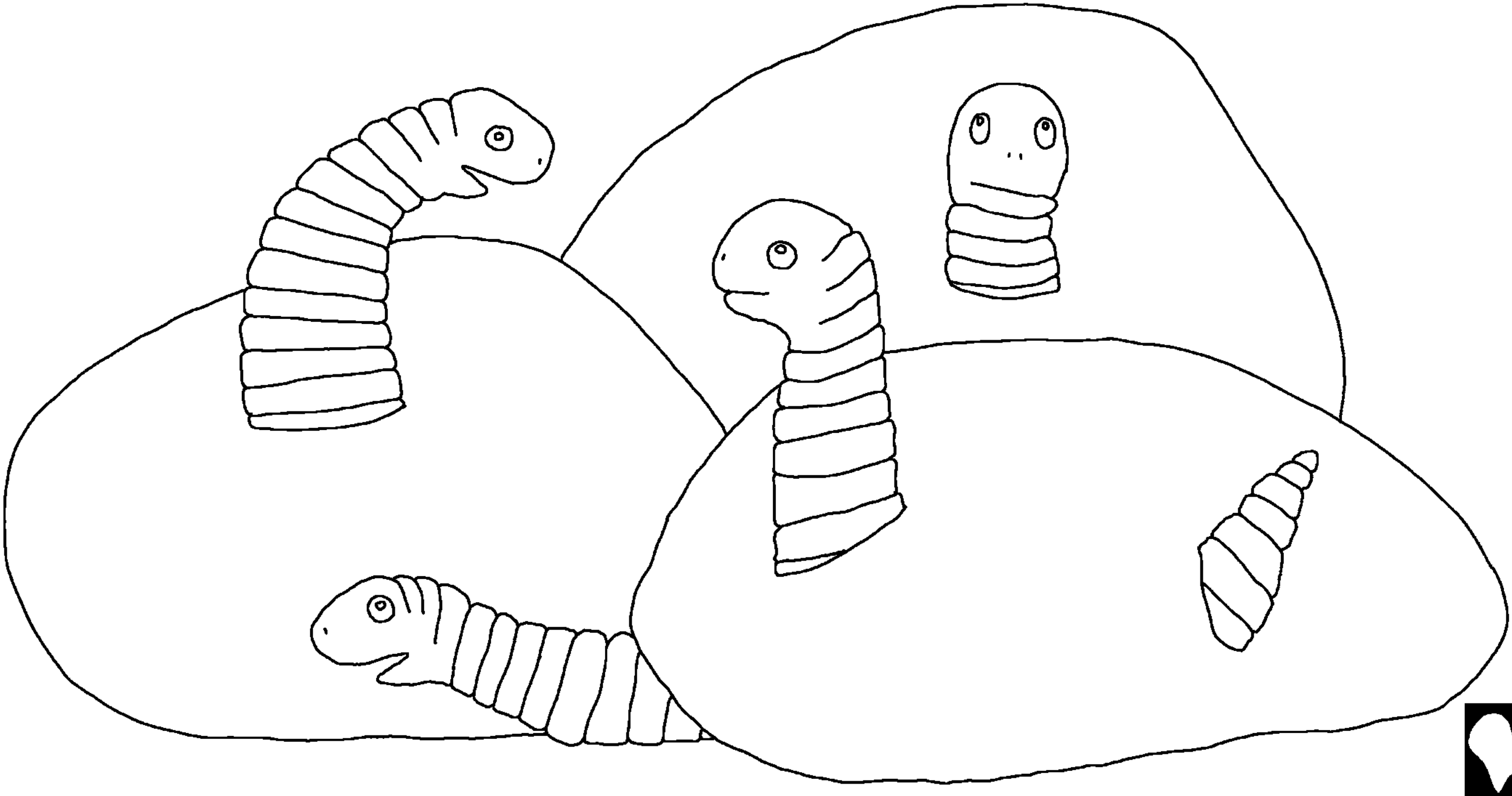

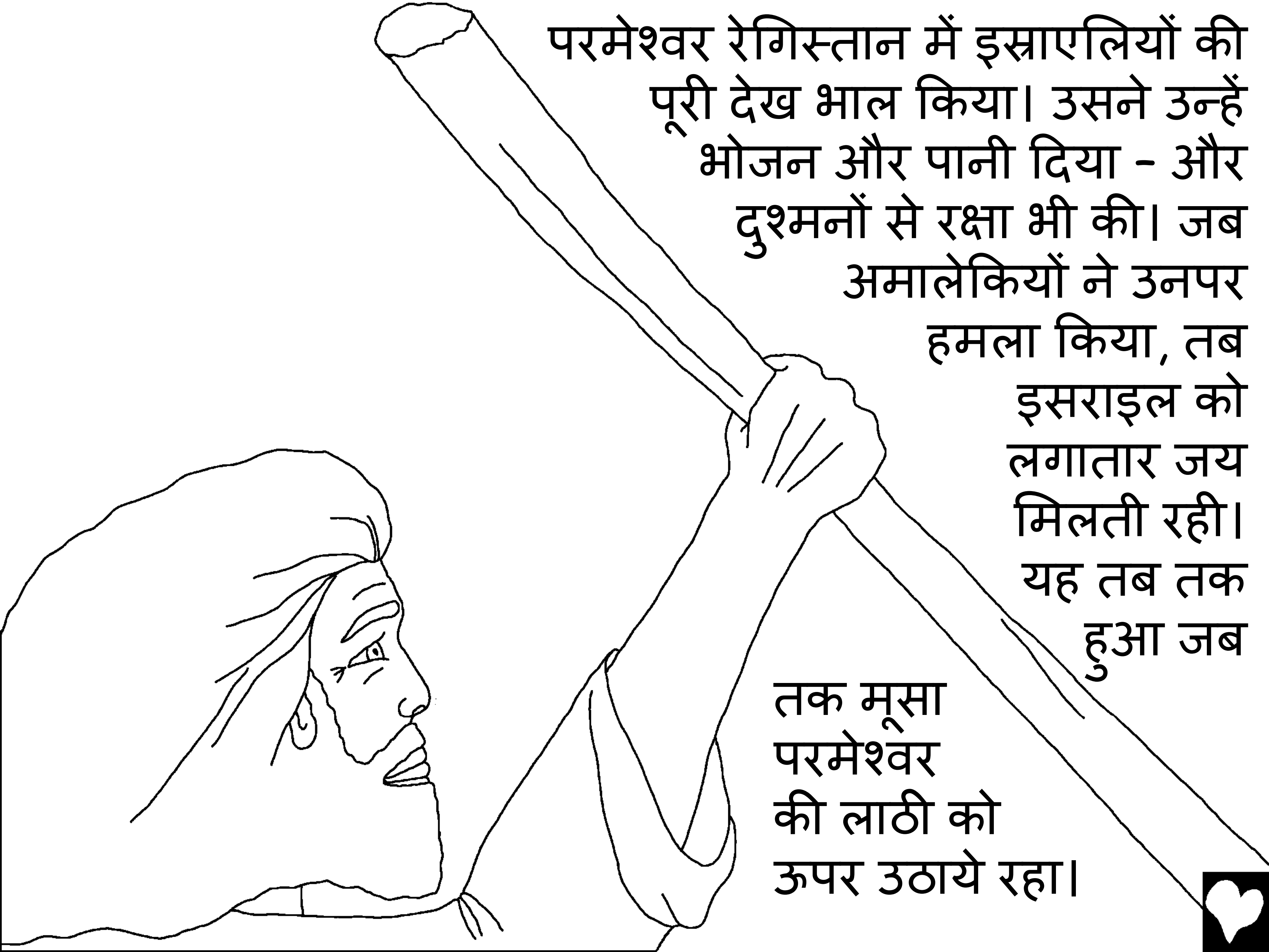

परमेश्वर रेगिस्तान में इस्राएलियों की पूरी देख भाल किया। उसने उन्हें भोजन और पानी दिया – और दुश्मनों से रक्षा भी की। जब अमालेकियों ने उनपर हमला किया, तब इसराइल को लगातार जय मिलती रही। यह तब तक हुआ जब

तक मूसा परमेश्वर की लाठी को ऊपर उठाये रहा।

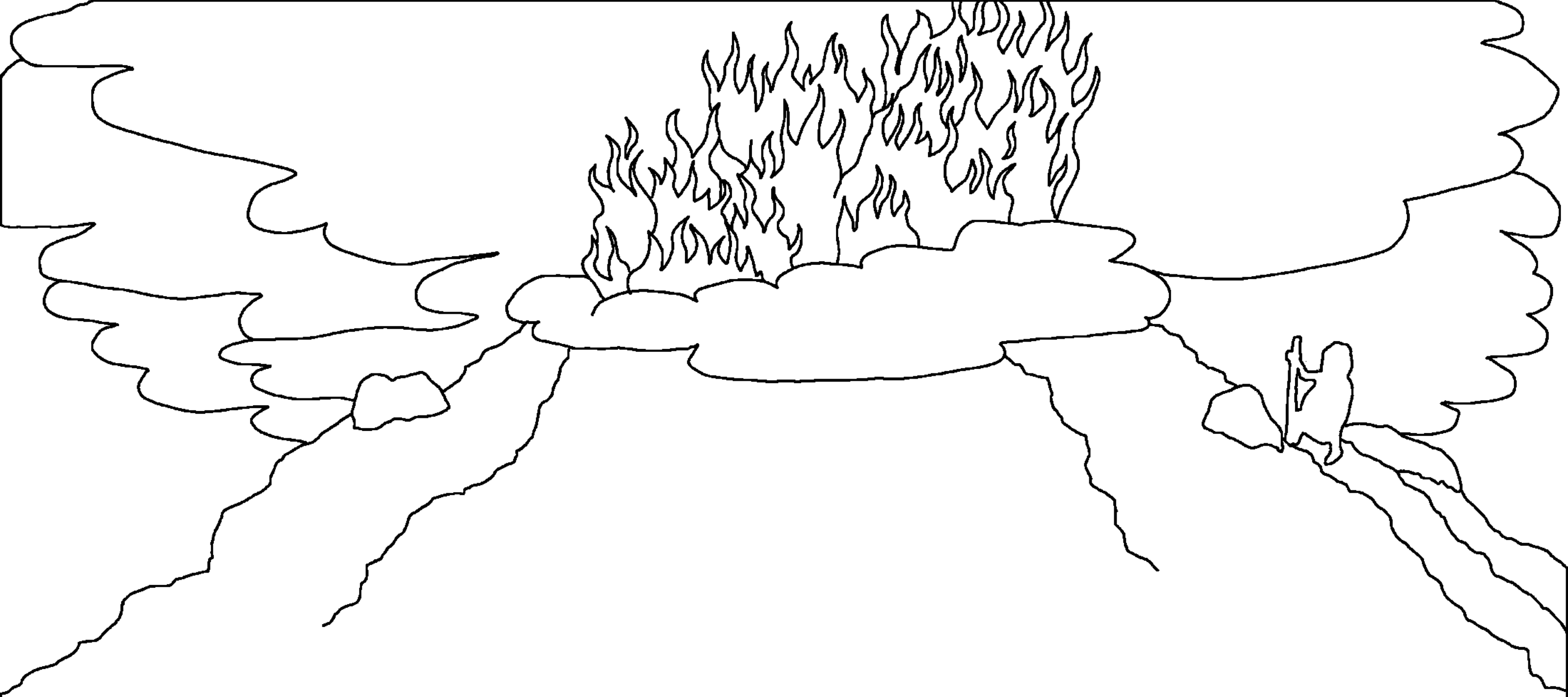

परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा, "यदि तुम मेरे वचनों का पालन करो तो तुम मेरे खास लोग होगे।" "सभी लोगों ने मूसा से कहा," परमेश्वर जो कुछ हमसे कहेंगे हम उसे करेंगे। वे सब सीनै पहाड़ के पास नीचे आये और इंतजार करने लगे जबतक मूसा परमेश्वर से मिलने ऊपर गया।

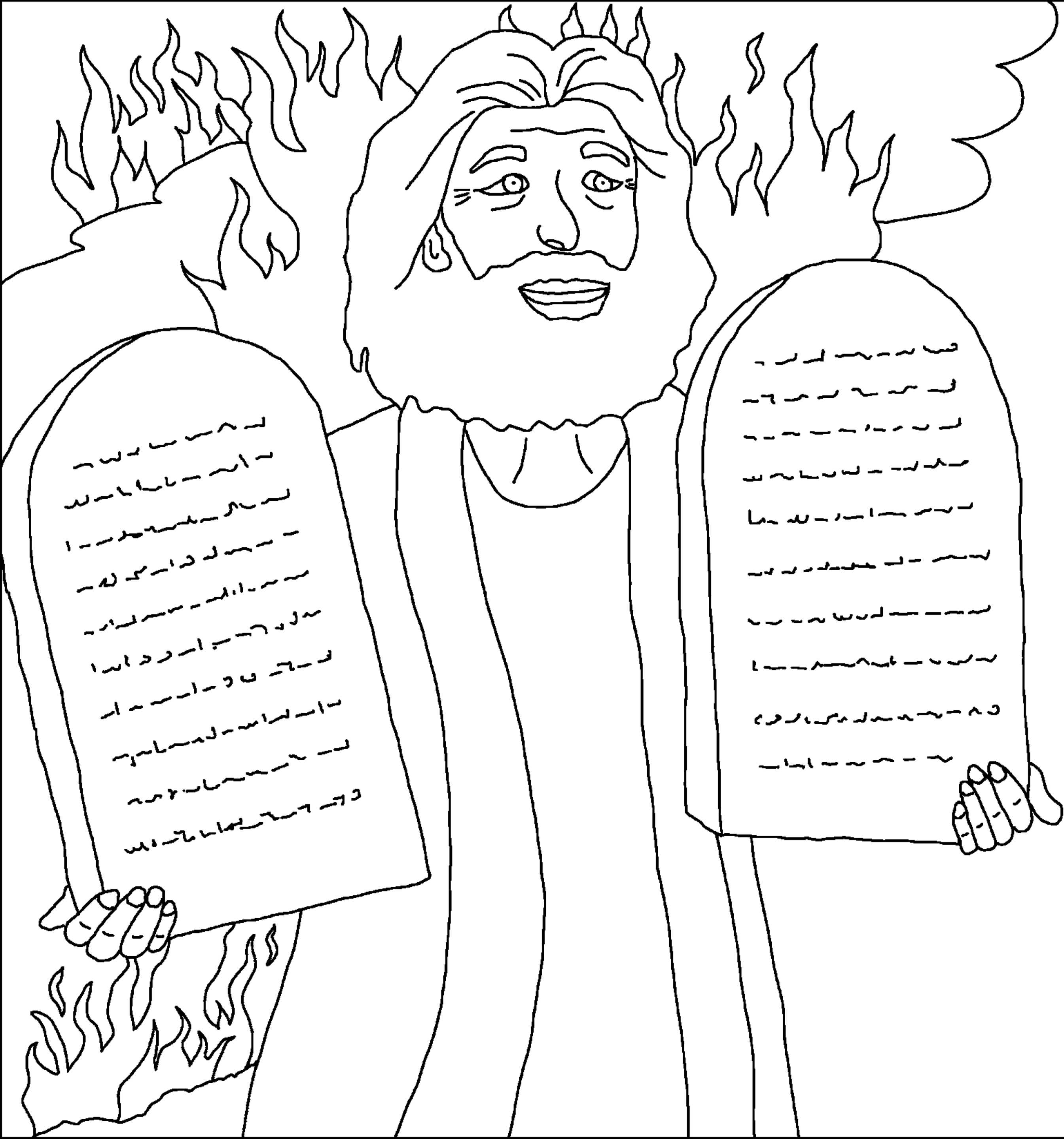

मूसा चालीस
दिन तक पहाड़
पर परमेश्वर
के साथ था।
परमेश्वर पत्थर
की दो पट्टियों
पर दस आज्ञाओं
को लिखा। उसने
मूसा को बताया
कि वह अपने
लोगों का जीवन
कैसा चाहता है।

1. "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना"

2. "अपने लिये कोई मूर्ति न बनाना और न झुककर दण्डवत करना"

3. "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना"

4. "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना"

5. "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना"

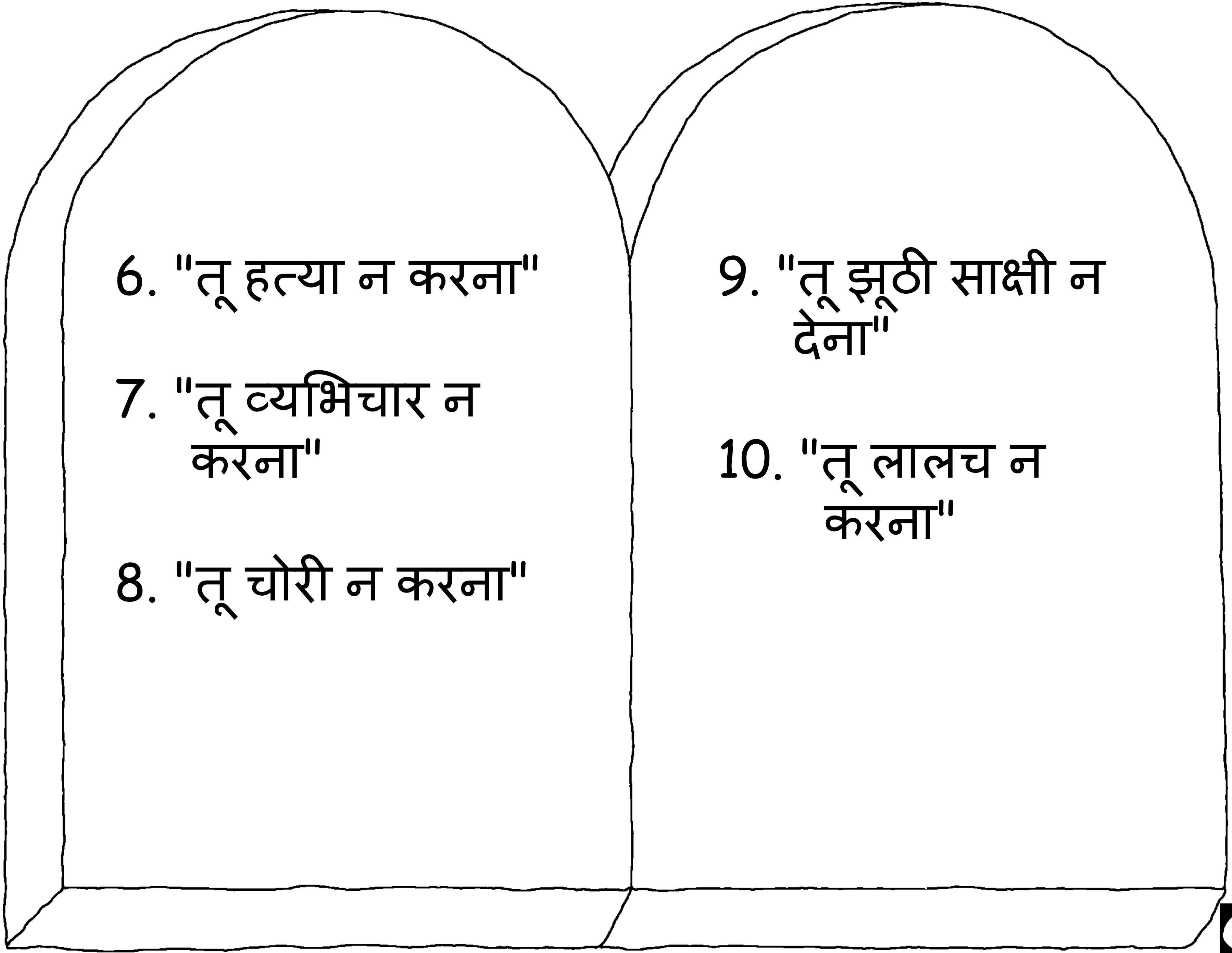
6. "तू हत्या न करना"
7. "तू व्यभिचार न करना"
8. "तू चोरी न करना"
9. "तू झूठी साक्षी न देना"
10. "तू लालच न करना"

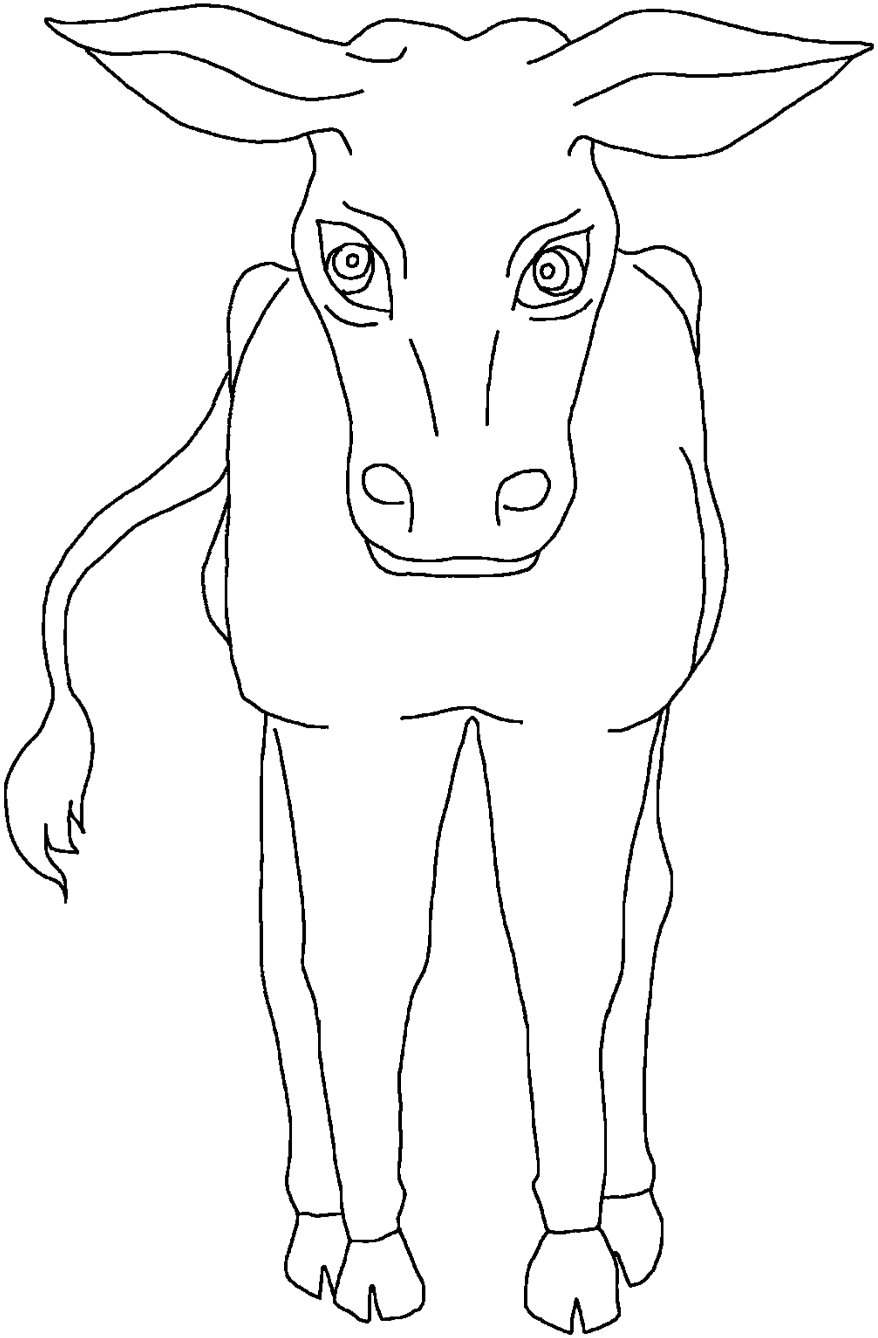

जब मूसा सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ था तब इस्राएलियों ने कुछ दर्दनाक काम किया। उन्होंने हारून को एक सुनहरा बछड़ा बनाने का आदेश दिया - और वे परमेश्वर के बजाय उसकी पूजा की। परमेश्वर उनसे बहुत नाराज था। और तब मूसा भी।

जब मूसा उस बछड़े को
और लोगों को नाचते देखा।
वह पत्थर की पट्टियों को
जमीन पर तोड़ डालीं।
गुस्से में मूसा ने उस
सुनहरे मूर्ति को नष्ट कर
दिया। जिन्होंने उसकी
पूजा की थी उन दुष्ट पुरुषों
को भी वह नष्ट कर दिया।

परमेश्वर उन दो पत्थर की पट्टियों को पुनः प्रदान की। उसने मूसा से एक निवास स्थान का निर्माण के लिए कहा, जो चारों ओर बाड़े के साथ एक बड़ा तम्बू जहाँ परमेश्वर उनके लोगों के बीच रहेगा। उन्हें वहाँ परमेश्वर की आराधना करनी थी। परमेश्वर की उपस्थिति को बादल और आग के खम्भे दर्शाते थे।

कनान देश के नजदीक पहुँचने पर, परमेश्वर द्वारा वादा किये हुवे देश को देखने के लिए मूसा ने बारह जासूसो को भेजा। सभी जासूसों ने यह सहमती जतायी की देश बहुत खूबसूरत है! लेकिन केवल दो, यहोशू और कालेब, ही विश्वास किये कि परमेश्वर की मदद से इस देश को जीता जा सकता है।

अन्य दस जासूस उस देश मजबूत शहरों और दिग्गजों से डरते थे। "हम उस देश पर विजयी नहीं हो सकते हैं," वे कराहे। परमेश्वर ने मिस्र में से उन्हें कैसे मुक्त किया, ये महान बातें वे भूल चुके थे।

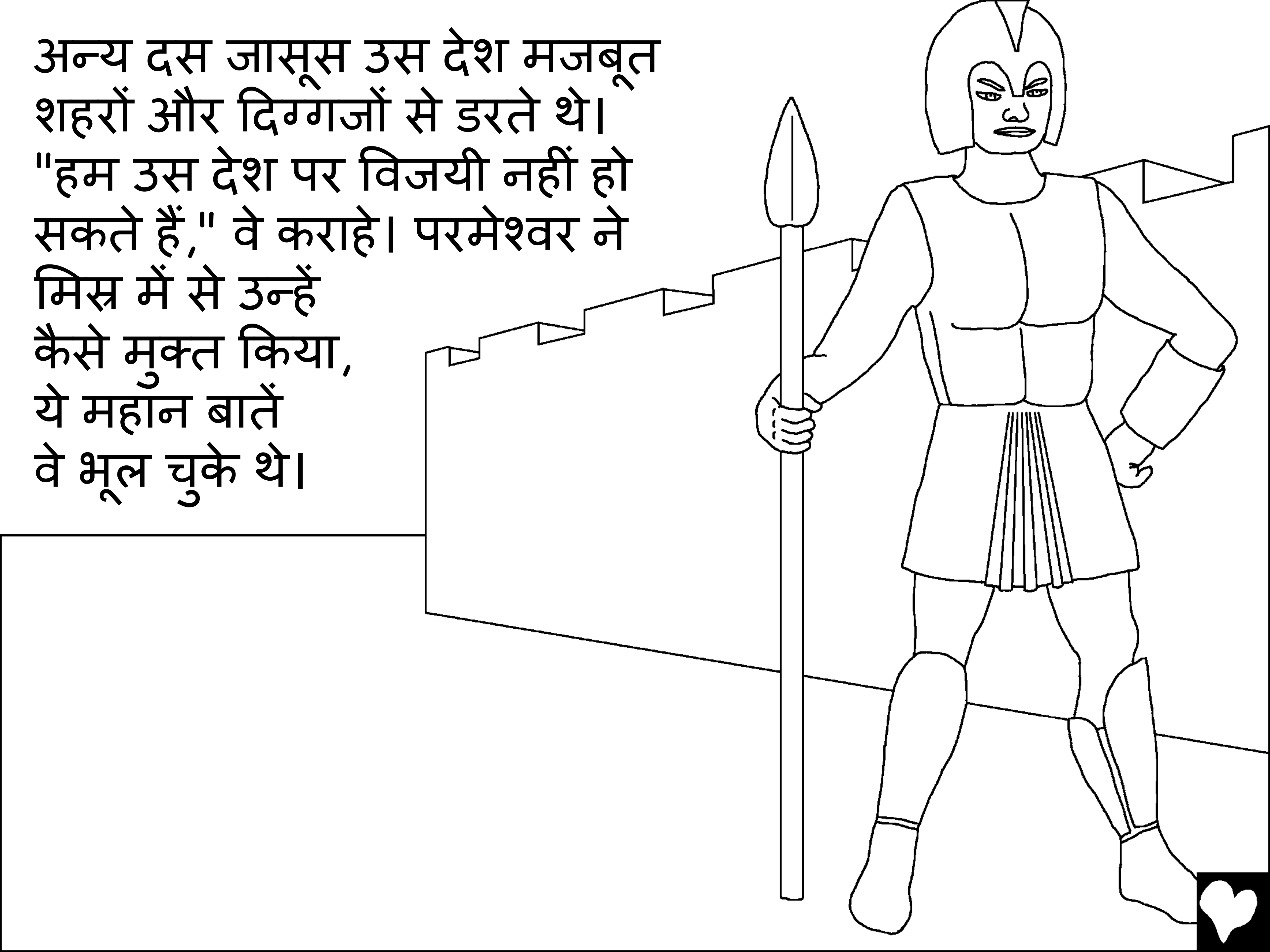

लोग उन दस अविश्वासी जासूसों की बातों पर विश्वाश किया। वे रोये और वापस मिस्र में जाने के लिए तैयार होने लगे। वे सब मूसा को जान से मारने की कोशिश भी किये!

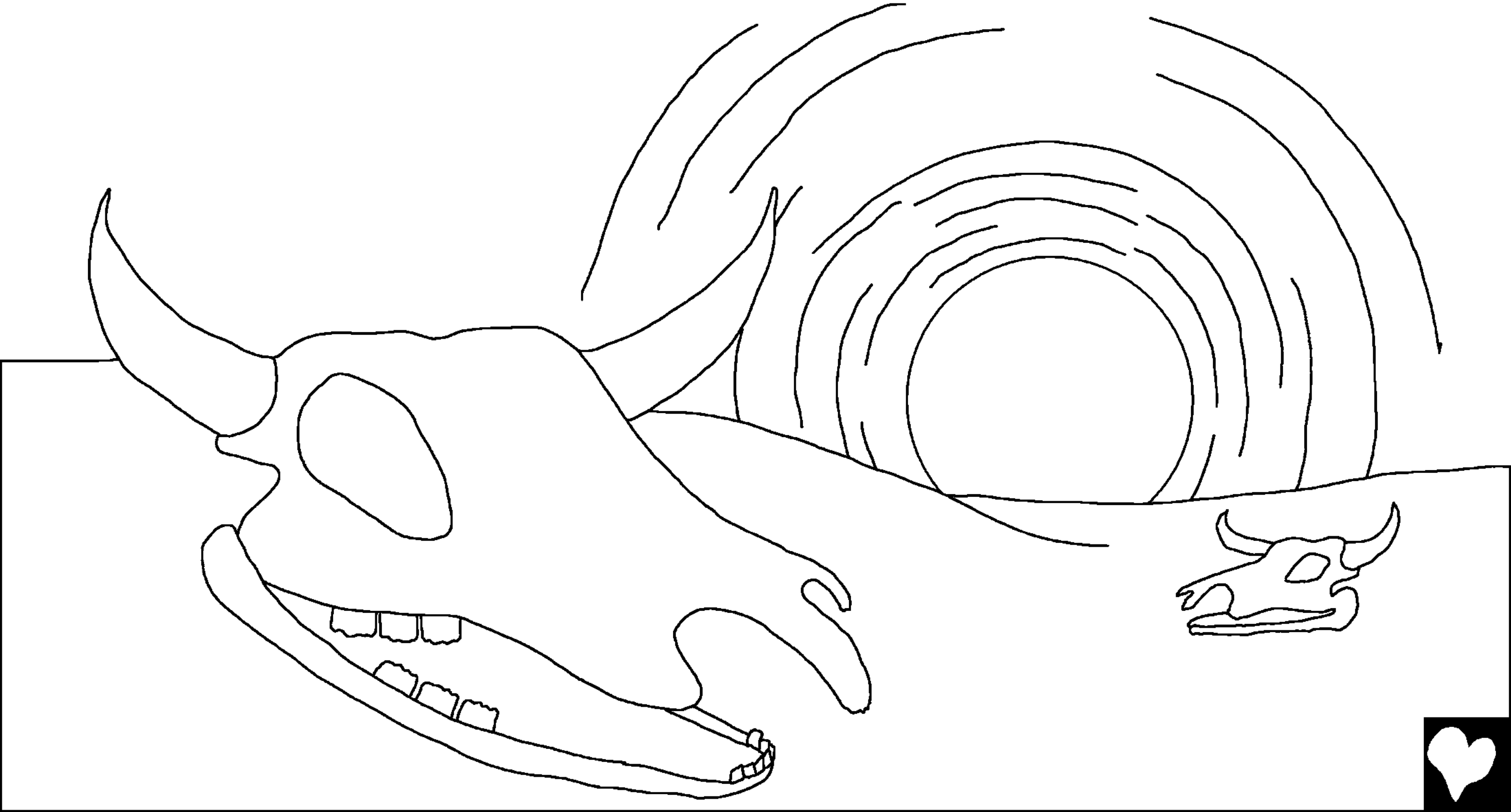

परमेश्वर ने मूसा की जान को बचाया। तब उसने लोगों से कहा, "तुम सब चालीस साल के लिए जंगल में भटकते रहोगे। केवल कालेब, जोशुआ, और उनकी संताने जीवित रहेंगी और उस जासूसी किये देश में
प्रवेश करने पायेंगे।"

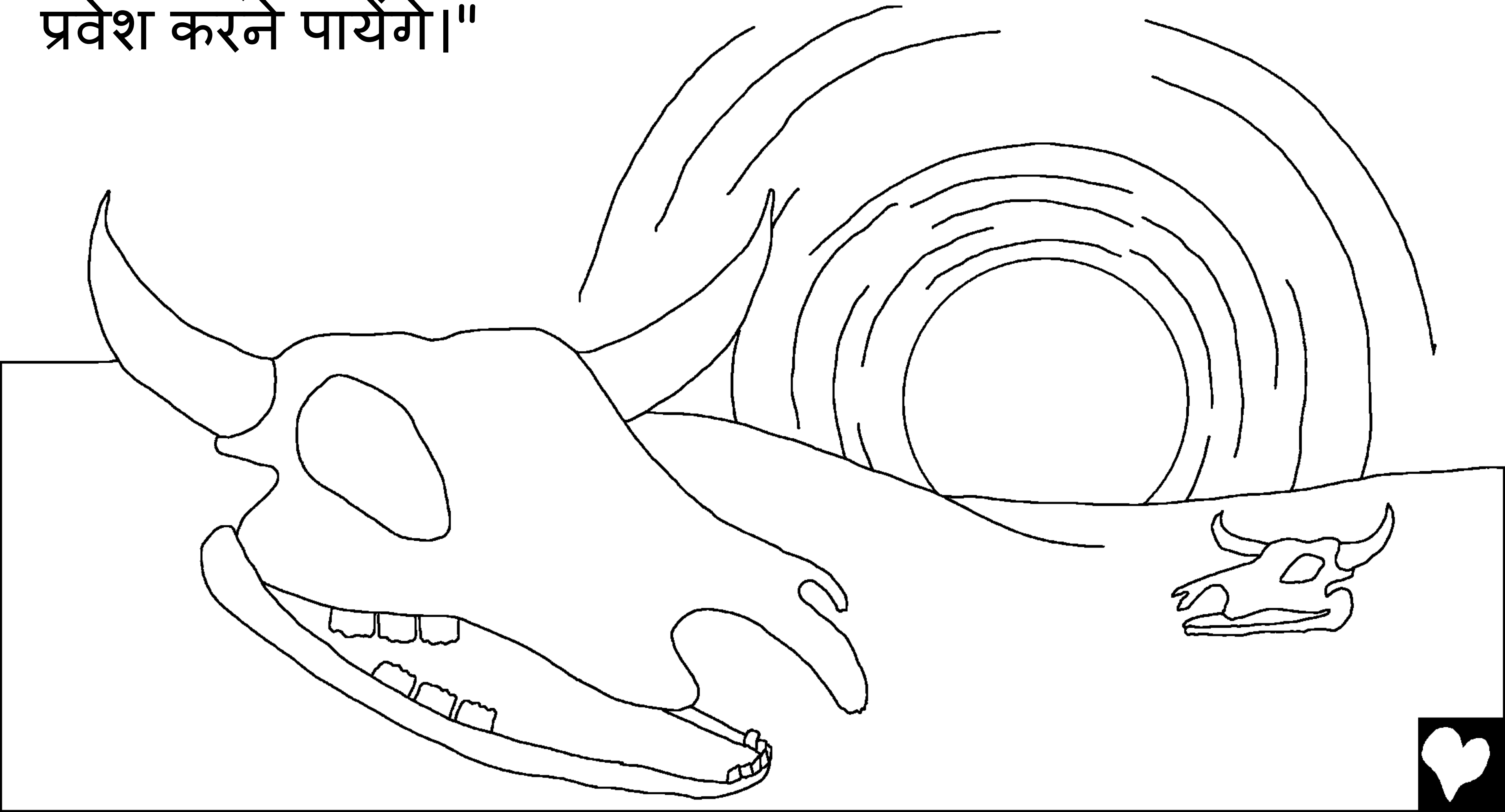

चालीस वर्ष

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

निर्गमन 15 से गिनती 34

“जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।”
प्लाज्म 119:130

समाप्त

12

60

बाइबल की यह कहानी हमें अपने उस अद्भुत परमेश्वर के बारे में बतलाती है जिसने हमें बनाया और जो चाहता है कि आप उसे जानें।

परमेश्वर जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप मानता है। पाप की सज़ा मौत है किंतु परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने एकमात्र पुत्र यीशु को इस दुनिया में भेजा ताकि वह सूली (क्रॉस) पर चढ़कर आपके पापों की सजा भुगते। यीशु मरने के बाद पुन: जीवित हुआ और स्वर्ग में अपने घर चला गया। यदि आप यीशु में विश्वास करते है और उससे अपने पापों की क्षमा मांगते हैं तो वह अपकी प्रार्थना सुनेगा। वह अभी आकर आपके अंदर बसेगा और आप हमेशा ही उसके साथ बने रहेंगे।

यदि आपको विश्वास है कि यह सब कुछ सच है, तो परमेश्वर से कहें: प्रिय यीशु, मुझे विश्वास है कि तू ही परमेश्वर है और मनुष्य के रूप में अवतरित हुआ ताकि मेरे पापों की वजह से। मौत की सजा भुगत सके और अब तू पुन: जीवित हुआ है। कृपया मेरी ज़िंदगी में आकर मेरे पापों को क्षमा कर, ताकि मुझे एक नया जीवन मिले और एक दिन में हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ हो लूं। हे यीशु, मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी हर आज्ञा का पालन कर सकूं और तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं। आमीन।

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर से बात करें! जॉन 3:16